बिहार सरकार

कृषि विभाग

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम

गौरव : जलवायु अनुकूल खेती के लिए बिहार को ग्लोबल अवार्ड मिलेगा

- इंडिया वाटर फाउंडेशन 6 दिसंबर को देगा पुरस्कार
- 38 जिलों के 190 गांवों में चल रहा कार्यक्रम

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। बिहार को इस साल का वाटर ट्रांसवर्सैलिटी ग्लोबल अवॉर्ड मिला है। जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम में बेहतर प्रदर्शन के लिए राज्य का इस पुरस्कार के लिए चयन हुआ है।

इंडिया वाटर वाटर फाउंडेशन संस्थान की ओर से नई दिल्ली में छह दिसंबर को आयोजित कार्यक्रम में बिहार को यह सम्मान प्रदान किया जाएगा। कृषि सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने बुधवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पहल से बिहार के सभी जिलों के पांच-पांच गांवों में जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम का क्रियान्वयन बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया (बीसा), बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पटना के सहयोग से किया जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जलवायु अनुकूल प्रावैधिकियों का उपयोग कर जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए छोटे एवं सीमान्त किसानों को सशक्त बनाना है।

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती), पटना
आई०एस०ओ० 9001 : 2015 प्रमाणित
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com

Gyan Ganga Creations, M2/38, S.K.Puri, Patna
Mob. : 9334110685, E-mail : ggcreations5@gmail.com

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम

1. **पृष्ठभूमि :** जलवायु परिवर्तन एक विश्वव्यापी समस्या है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की अनियमितता सर्वविदित है। जलवायु परिवर्तन का असर पिछले कुछ वर्षों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगा है। मौसम में हो रहे परिवर्तन के अनुसार फसल चक्र तथा कृषि तकनीक में परिवर्तन की आवश्यकता को देखते हुए किसानों को सक्षम बनाने के लिए सरकार द्वारा जलवायु के अनुकूल कृषि कार्यक्रम की स्वीकृति दी गयी है।
2. **परियोजना लागत :** वित्तीय वर्ष 2019–20 से 2024–25 तकइस परियोजना की कुल लागत 29914.36 लाख रूपये है।
3. **परियोजना का क्षेत्र :** परियोजना के दो प्रमुख अवयव हैं। पहला अवयव किसानों के खेत में उपलब्ध जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक के प्रत्यक्षण से संबंधित है। इस योजना के इस अवयव का कार्यान्वयन राज्य के 8 जिले मधुबनी, खगड़िया, भागलपुर, बाँका, मुंगेर, नवादा, गया तथा नालन्दा में वर्ष 2019 से तथा शेष 30 जिलों में वर्ष 2020 से किया जा रहा है। प्रत्येक जिला से पाँच गाँवों को जलवायु के अनुकूल कृषि कार्यक्रम के मॉडल कृषि गाँव के रूप में विकसित किया जा रहा है।
4. **परियोजना का प्रमुख अवयव :** इस परियोजना के अधीन जलवायु के अनुकूल फसल तथा फसल प्रभेद के व्यवहार, लेजर लैण्ड लेवलिंग, हैप्पी सीडर जीरो टिलेज, धान की सीधी बुवाई, रेज–बेड प्लांटिंग, संरक्षित खेती, फसल प्रबंधन / मल्चिंग तकनीक को प्रदर्शित किया जा रहा है। जिसे किसान देखकर सीख सकेंगे।

   मौसम से अनुकूलता से संबंधित अवयवों को संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है–

   - परियोजना के अधीन सिंचाई जल के महत्तम उपयोग के लिए धान की सीधी बुआई, धान में वैकल्पिक जल प्रबंधन, सूक्ष्म सिंचाई, भूमि का समतलीकरण मेड़ पर फसलों की बुआई की तकनीक प्रमुख रूप से कार्यान्वित किये जायेंगे।
   - परियोजना के अधीन कार्बन संरक्षण के लिए जीरो टिलेज, फसल अवशेष प्रबंधन तकनीक प्रदर्शित किये जा रहे हैं।
   - परियोजना के अधीन पोषक तत्व प्रबंधन से संबंधित मक्का एवं गेहूँ के लिए न्यूट्रीयेंट एक्सपर्ट, ग्रीन सीकर का प्रयोग एवं फसल चक्र में दलहनी फसलों के उपयोग की तकनीक प्रदर्शित किये जा रहे हैं।

5. **परियोजना का कार्यान्वयन :** इस योजना का कार्यान्वयन बोरलॉग इंस्टीच्यूट फॉर साउथ एशिया, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् पूर्वी क्षेत्र, पटना के वैज्ञानिकों के द्वारा किया जा रहा है।

जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम

कार्यान्वयन एजेन्सी

6. **कृषि विज्ञान केन्द्र :** जिला स्तर पर इस योजना को कार्यान्वित कराने में कृषि विज्ञान केन्द्र की अहम् भूमिका रहती है। प्रत्येक जिले के 05 गाँव में कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से किसानों के खेत पर मौसम अनुकूल फसल प्रणाली का प्रत्यक्षण कराया जाता है। साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन एवं कृषि के प्रति जागरूकता के लिए किसानों को प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रत्येक जिले के कृषि विज्ञान केन्द्र में इस योजना से कृषि यंत्र बैंक भी स्थापित किया है जिसे किसानों को उपलब्ध कराया जाता है।
7. **जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक का प्रत्यक्षण :** राज्य के सभी 190 गाँवों में जलवायु अनुकूल कृषि तकनीक का प्रत्यक्षण किया गया। खरीफ, रबी एवं गरमा मौसम में प्रत्यक्षण अर्न्तगतफसल प्रणाली का विवरण निम्नवत है :–

क्र०सं०	फसल प्रणाली	क्र०सं०	फसल प्रणाली
1	चावल – गेहूँ – मूंग	11	बाजरा – मसूर – मूंग
2	चावल – मक्का	12	बाजरा – मक्का –ढैंचा
3	मक्का – गेहूँ – मूंग	13	रागी – गेहूँ – मूंग
4	मक्का – मसूर – मूंग	14	रागी – मसूर – मूंग
5	मक्का – चना – मूंग	15	रागी – मक्का –ढैंचा
6	मक्का – आलू – मूंग	16	रागी – गेहूँ – तिल
7	सोयाबीन – मक्का –ढैंचा	17	ज्वार – गेहूँ – मूंग
8	सोयाबीन – गेहूँ – मूंग	18	कंगनी – गेहूँ – मूंग
9	बाजरा – गेहूँ – मूंग	19	कोदो – गेहूँ – मूंग
10	बाजरा – चना – मूंग	20	सांवा– गेहूँ – मूंग

धान–मक्का फसल प्रणाली से सबसे अधिक उत्पादकता (134.2 क्विं०/हे०) तथा धान–गेहूँ–मूंग फसल प्रणाली की उत्पादकता (101.50 क्विं०/हे०) प्राप्त हुआ है जिससे किसानों को क्रमशः 1,69,506 तथा 1,55,797 रूपये/हे० तक शुद्ध आय प्राप्त हुआ है।

किसानों का जलवायु अनुकूल कृषि गाँव में परिभ्रमण एवं प्रशिक्षण :

5.9 लाख किसानों का प्रशिक्षण एवं परिभ्रमण माह दिसम्बर, 2024 तक कराया गया।

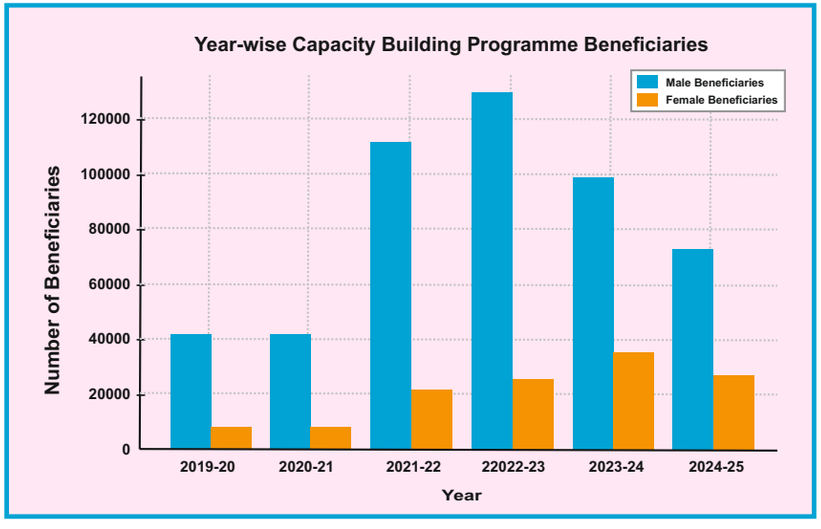

पाँच वर्षों में प्रशिक्षण एवं क्षमतासंवर्द्धन प्राप्त किए हुए किसानों की संख्या

ग्राम– बहरखाल, जिला– कटिहार में मक्के का फसल कटनी एवं क्षेत्र दिवस

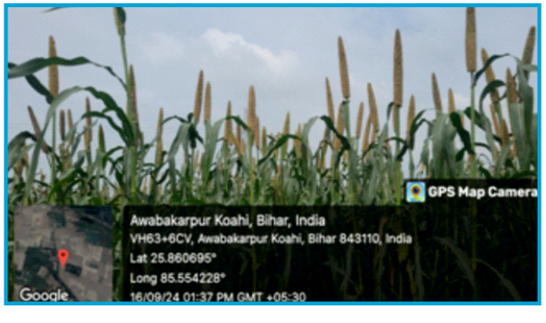

ग्राम– निरपुर, जिला– वैशाली में बाजरा का प्रभेद– अजित 42 का प्रत्यक्षण

ग्राम– रेश्मापुर, जिला– मधेपुरा में सावाँ का प्रभेद– RAU 05 फसल का प्रत्यक्षण

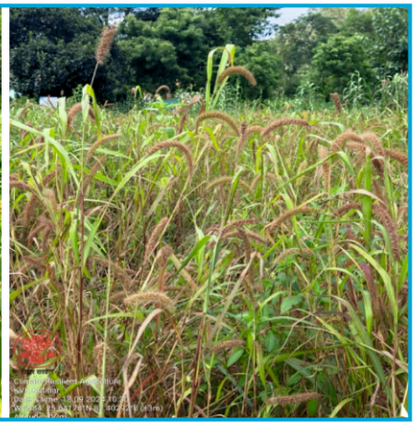

अवार्ड :

India Water Foundation द्वारा दिनांक 06.12.2024 को जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम में बेहतर प्रदर्शन के लिए बिहार को Water Transversality Global Awards, 2024 से सम्मानित किया गया। यह बिहार के लिए गर्व की बात है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए छोटे एवं सीमांत किसानों को सशक्त बनाना है।